

## योगिनी एकादशी व्रत कथा in Hindi

महाभारत काल की एक घटना है कि एक बार युधिष्ठिर ने भगवान श्री कृष्ण से कहा: हे विश्व के नाथ! मैंने ज्येष्ठ माह शुक्ल पक्ष की निर्जला एकादशी की कथा सुनी है। अब कृपा करके आप मुझे आषाढ़ मास कृष्ण पक्ष की एकादशी के विषय में विस्तारपूर्वक समझाइए। इस एकादशी की क्या महिमा है और इसका क्या नाम है ?

श्री कृष्ण ने कहा: हे पाण्डु नंदन! आषाढ़ मास कृष्ण पक्ष की एकादशी योगिनी एकादशी के नाम से प्रसिद्ध है। इसका व्रत करने मात्र से ही सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। यह व्रत इस लोक में भोग और परलोक में मुक्ति दोनों देता है।

हे धर्मपुत्र! यह एकादशी त्रिलोक में प्रसिद्ध है। इसके व्रत से समस्त पाप दूर होते हैं। अब मैं तुम्हें पुराणों में वर्णित एक कथा सुनाता हूँ, ध्यानपूर्वक श्रवण करो-

कुबेर नाम का एक नरेश अलकापुरी नगर का शासन करता था। वह शिव भक्त था। उसका हेममाली नाम का एक यक्ष सेवक था, जिसका कर्तव्य शिव पूजा के लिए फूल लाना था। हेममाली की अर्द्धांगिनी को विशालाक्षी कहते थे, जो अत्यंत रूपवती थी।

कोई एक दिवस हेममाली मानसरोवर से पुष्प लेकर आया, किंतु कामवासना वश होकर पत्नी के साथ रतिक्रीड़ा में लिप्त हो गया और पुष्पों को भी एक ओर रख दिया। इस काम-क्रीड़ा में उसे दोपहर हो गई।

जब हेममाली के आने में विलंब हुआ तो कुबेर क्रोधित हो उठा और सेवकों को आज्ञा दी कि जाकर जानो कि हेममाली अब तक फूल क्यों नहीं लाया। जब सेवकों ने देखा तो पाया कि वह अपनी पत्नी के साथ रमण में व्यस्त है। उन्होंने जाकर यह बात राजा को बताई।

यह सुनते ही क्रोधित कुबेर ने हेममाली को तलब किया। भय से थर-थर काँपता हुआ हेममाली राजा के सम्मुख उपस्थित हुआ। उसे देखकर कुबेर का क्रोध सातवें आसमान पर पहुँच गया और उसके होंठ काँपने लगे।

कुबेर ने कहा: अरे पापी! तूने मेरे आराध्यदेव भगवान शंकर का अपमान किया है। मैं तुझे अभिशाप देता हूँ कि तू पत्नी-वियोग में तड़पे और मृत्युलोक में जाकर कुष्ठ रोग से पीड़ित हो।

कुबेर के शाप से वह तत्काल स्वर्ग से पृथ्वी पर गिर पड़ा और कोढ़ी बन गया। उसकी स्त्री भी उससे बिछुड़ गई। धरती पर आने के बाद उसने कई भयानक यातनाएँ सहीँ, किंतु महादेव की कृपा से उसकी बुद्धि भ्रष्ट न हो सकी और उसे पिछले जन्म की भी याद रही।

नाना प्रकार के कष्ट सहते हुए तथा बीते जन्मों के कर्मों का स्मरण करते हुए वह हिमालय की ओर चल पड़ा।

भ्रमण करते-करते वह मार्कण्डेय ऋषि के आश्रम में पहुँच गया। वे ऋषि अत्यंत वृद्ध तपस्वी थे। वे द्वितीय ब्रह्मा के समान जान पड़ते थे और उनका आश्रम ब्रह्मलोक जैसा प्रतीत हो रहा था। ऋषि को देख हेममाली उनके पास गया, उन्हें प्रणाम किया और उनके चरणों में गिर पड़ा।

हेममाली को देखकर मार्कण्डेय ऋषि बोले: तूने ऐसे कौन-से अधम कर्म किए हैं जिससे कुष्ठ रोगी बना और इतना दारुण दुःख भोग रहा है?

मुनि के वचन सुनकर हेममाली ने कहा: हे ऋषिवर! मैं कुबेर राजा का एक सेवक था। मेरा नाम हेममाली है। मैं प्रतिदिन मानसरोवर से फूल लाकर कुबेर को शिव पूजा के लिए देता था। एक दिन पत्नी-सुख में आसक्त होने से मुझे संयम खो बैठा और दोपहर तक फूल नहीं पहुँचा पाया। तब उन्होंने क्रोधवश मुझे शाप दिया कि तू पत्नी-वियोग में तड़पे और मर्त्यलोक में जाकर कुष्ठ रोगी बनकर दुख उठाए। फलस्वरूप मैं कोढ़ी बन गया और पृथ्वी पर आकर बहुत कष्ट झेल रहा हूँ। अतः कृपया मेरी मुक्ति का कोई उपाय बताएं।

मार्कण्डेय ने कहा: हे हेममाली! तूने मेरे सामने सत्य बोला है, अतः मैं तेरे उद्धार का एक उपाय बताता हूँ। यदि तू आषाढ़ मास कृष्ण पक्ष की योगिनी एकादशी का विधिवत् व्रत करेगा तो तेरे सभी पाप नष्ट हो जाएँगे।

महर्षि के वचन सुनकर हेममाली अत्यंत हर्षित हुआ और उन्होंने बताई विधि से योगिनी एकादशी व्रत करना शुरू कर दिया। इस व्रत के प्रभाव से वह फिर से पहले जैसा बन गया और अपनी पत्नी के साथ सुखपूर्वक निवास करने लगा।

भगवान श्री कृष्ण ने कहा - हे नरेश! योगिनी एकादशी की इस कथा के श्रवण और कथन का फल **88000** ब्राह्मणों को भोजन कराने के तुल्य है। इसके व्रत करने से सभी पाप विनष्ट हो जाते हैं और अंततः मोक्ष लाभ कर साधक स्वर्ग का अधिकारी बनता है।

## **Yogini Ekadashi Vrat Katha in English**

**During the time of the Mahabharata, Yudhishtira once asked Lord Krishna, "O Lord of the Universe! I have heard the story of Nirjala Ekadashi in the Shukla Paksha of the Jyeshtha month. Now, please tell me in detail about the Ekadashi of the Krishna Paksha in the Ashadha month. What is the significance of this Ekadashi, and what is its name?"**

**Lord Krishna replied, "O son of Pandu! The Ekadashi of the Krishna Paksha in the Ashadha month is renowned as Yogini Ekadashi. Observing the fast of this Ekadashi destroys all sins. This fast grants both worldly pleasures and liberation in the afterlife."**

**"O Dharmaputra! This Ekadashi is famous across the three worlds. By observing its fast, all sins are removed. Now, I will narrate to you a story mentioned in the Puranas, so listen carefully."**

**There was once a king named Kubera who ruled over the city of Alkapuri. He was a devout worshipper of Lord Shiva. He had a Yaksha servant named Hemamali, whose duty was to gather flowers for Shiva's worship. Hemamali's wife, Vishalakshi, was very beautiful.**

**One day, Hemamali brought flowers from Lake Mansarovar, but, overcome by lust, he became involved in romance with his wife, setting the flowers aside. Lost in this pleasure, the entire afternoon passed.**

**When Hemamali was delayed, Kubera became furious and ordered his servants to find out why Hemamali hadn't yet brought the flowers. The servants found Hemamali engaged in romance with his wife and informed the king.**

**Upon hearing this, Kubera summoned Hemamali, who came trembling with fear before the king. Seeing him, Kubera's anger intensified, and his lips quivered with rage.**

**Kubera said, "You sinful one! You have insulted my beloved Lord Shiva. I curse you to suffer the pangs of separation from your wife and to be afflicted with leprosy on earth."**

**Under Kubera's curse, Hemamali immediately fell from heaven to earth and was afflicted with leprosy. His wife was also separated from him. On earth, he endured numerous hardships, yet by the grace of Lord Shiva, he did not lose his wisdom and retained the memory of his previous life.**

**Suffering greatly and remembering his past deeds, he made his way toward the Himalayas.**

**After wandering for some time, he reached the ashram of Sage Markandeya. This sage was an ancient ascetic, resembling a second Brahma, and his ashram appeared as glorious as Brahmaloaka. Hemamali went to him, bowed, and fell at his feet.**

**Seeing Hemamali, Sage Markandeya asked, "What sinful acts have you committed to become afflicted with leprosy and endure such extreme suffering?"**

**Upon hearing the sage's words, Hemamali replied, "O revered sage! I was a servant of King Kubera. My name is Hemamali, and my daily duty was to bring flowers from Lake Mansarovar for Kubera's worship of Lord Shiva. One day, engrossed in the pleasure of my wife, I lost control and did not deliver the flowers by noon. In his anger, Kubera cursed me to suffer the torment of separation from my wife and to endure leprosy on earth. As a result, I became afflicted with leprosy and have suffered greatly on earth. Please, kindly guide me to liberation."**

**Markandeya replied, "O Hemamali! You have spoken truthfully before me, so I will tell you a way to attain salvation. If you observe the fast of Yogini Ekadashi in the Krishna Paksha of the Ashadha month with proper rituals, all your sins will be eradicated."**

**Hearing the sage's words, Hemamali was overjoyed and began observing the Yogini Ekadashi fast as instructed. Due to the power**

of this fast, he regained his original form and lived happily with his wife once more.

Lord Krishna then said, "O king! Listening to or narrating the story of Yogini Ekadashi brings the merit equal to feeding 88,000 Brahmins. Observing this fast destroys all sins, and ultimately, the practitioner attains liberation and becomes eligible for the heavenly realms."